मी-डैम-मी-फी उत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में

माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का अभिभाषण

दिनांक 31 जनवरी 2024, बुधवार	**समय : 12.00 PM**	**स्थान : नोटबमा, गुवाहाटी**

नमस्कार,

सर्वप्रथम आप सभी को मी-डैम-मी-फी की हार्दिक बधाई। इस पारंपारिक उत्सव के शुभ अवसर पर आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मुझे इस कार्यक्रम में आमंत्रित करने के लिए मैं वृहत्तर गुवाहाटी केंद्रीय मी-डैम-मी-फी आयोजन समिति को धन्यवाद देता हूं। साथ ही वृहत्तर गुवाहाटी ताई आहोम समुदाय और सैंग-रेंग संचालन समिति को कार्यक्रम की सफलता के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

मुझे बताया गया है कि वृहत्तर गुवाहाटी ताई आहोम समुदाय कई वर्षों से यहां परम्परागत रूप से तथा रीति-रिवाज से इस उत्सव का पालन कर रहा है और समुदाय के लोगों को एकता और भाईचारे के सूत्र में बांधे रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

जैसा कि आप सभी जानते हैं, मी-डैम-मी-फी प्राचीन काल से अहोम लोगों द्वारा मनाए जाने वाले महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह त्योहार दिवंगत पूर्वजों के प्रति सम्मान प्रकट करने और समाज में उनके योगदान को याद करने का त्योहार है।

यह त्यौहार न केवल अहोम के तौर-तरीकों और रीति-रिवाजों को दर्शाता है, बल्कि नई पीढ़ी के बीच एकता, भाईचारे की भावना और आपसी समझ पैदा करने में भी मदद करता है।

इस त्यौहार की अनोखी बात यह है कि यह न केवल अहोम लोगों द्वारा मनाया जाता है, बल्कि असम के अन्य समुदाय भी इसमें भाग लेते हैं। यह अपने पूर्वजों के प्रति आदर और सम्मान दर्शाने का एक तरीका है।

अहोम लोग अपने पूर्वजों के सम्मान में प्रतिवर्ष यह पूजा करते हैं। उनका मानना है कि मनुष्य की आत्मा जो अमर है, सर्वोच्च आत्मा के साथ मिलती है, उसमें आध्यात्मिक होने के गुण होते हैं और वह हमेशा परिवार को आशीर्वाद देती है।

कहा जाता है कि प्राचीन काल में अहोम राजा युद्धों में जीत के बाद और राज्य पर किसी भी भावी खतरे को टालने के लिए यह पूजा करते थे। अहोम राजाओं द्वारा इस त्यौहार को मनाने के कई उदाहरण मिलते हैं।

जब अहोम साम्राज्य का नाम लिया जाता है तो इस साम्राज्य के उन योद्धाओं की याद आ जाती है, जिन्होंने पठान या मुगल आक्रमणकारियों को अहोम राज्य में प्रवेश नहीं करने दिया। वह भी ऐसे वक्त में, जब लगभग पूरे भारत पर मुगलों ने कब्जा जमा लिया था।

यह बात सही है कि अहोम बाहर से आए और उन्होंने यहां शासन किया। लेकिन उन्होंने कभी भी यहां के लोगों को उनकी जाति, उनके धर्म, उनकी परम्पराओं या फिर संस्कृति को मानने के लिए बाध्य नहीं किया, जिनकी वजह से यहां के लोगों ने भी उन्हें अपना लिया। अहोम शासक और लोग यहां की संस्कृति में रच-बस गए और इसका अभिन्न अंग बन गए।

देवियो और सजज्नो,

त्योहार हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। ये हमें सामाजिक एकता, धार्मिक उत्साह और सांस्कृतिक धरोहर के महत्वपूर्ण संदेश प्रदान करते हैं। त्योहार हमारे धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतीक होते हैं। ये हमें अपनी समृद्ध संस्कृति के प्रति आदर और समर्पण की भावना का अहसास दिलाते हैं। धर्मिक त्योहार हमें उन मूल्यों की याद दिलाते हैं, जिन्हें हमें अपने जीवन में अनुसरण करना चाहिए।

भारत एक विविध संस्कृति वाला देश है। भारतीय संस्कृति अपनी विशाल भौगोलिक स्थिति के समान अलग-अलग है। यहाँ के लोग अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं, अलग-अलग तरह के कपड़े पहनते हैं, भिन्न-भिन्न धर्मों का पालन करते हैं, अलग-अलग भोजन करते हैं, किंतु उनका स्वभाव एक जैसा होता है।

चाहे कोई खुशी का अवसर हो या कोई दुख का क्षण, लोग पूरे दिल से इसमें भाग लेते हैं, एक साथ खुशी या दर्द का अनुभव करते हैं। पूरा समुदाय या आस-पड़ोस एक अवसर पर खुशियाँ मनाने में शामिल होता है।

भारतीय संस्कृति के बारे में **पं. मदनमोहन मालवीय** ने कहा है **"भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता और उसकी महत्ता तो संपूर्ण मानव के साथ तादात्म्य संबंध स्थापित करने अर्थात् 'वसुधैव कुटुंबकम्' की पवित्र भावना में निहत है।"**

देवियो और सज्जनो,

संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है, जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। अत: संस्कृति का साधारण अर्थ होता है- संस्कार, सुधार, परिवार, शुद्धि और सजावट।

भारत का इतिहास और संस्कृति गतिशील है और यह मानव सभ्यता की शुरुआत तक जाती है। जब से मनुष्य का जीवन अस्तित्व में है तब से वह निरंतर उन मूल्यों की तरफ अग्रसर रहा है, जिनकों प्राप्त कर लेने पर उसका जीवन व्यवस्थित हो जाता है।

भारत “विविधता में एकता” की भूमि है, जहां विभिन्न धर्मों के लोग अपनी संस्कृति और परंपरा के साथ शांतिपूर्ण तरीके से एक साथ रहते हैं। विभिन्न धर्मों के लोगों की अपनी भाषा, शैली, रीति-रिवाज अलग हैं, फिर भी वे एकता के साथ रहते हैं। अपनी संस्कृति के लिए हर भारतीय नागरिक समर्पित रहते हैं और सामाजिक संबंधों को बनाए रखने के लिए जाने जाते हैं।

संस्कृति एवं परंपराओं को बनाए रखने में केंद्र एवं राज्य सरकारों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। राज्य अपनी सांस्कृतिक परंपराओं एवं धरोहरों को संरक्षित रखने के लिए आर्थिक रूप से सक्रिय योगदान करते हैं तथा सभी सरकारों में इसके लिए अलग से एक मंत्रालय गठित किया जाता है, जो इस दिशा में कार्य करता है।

गैर-सरकारी संगठन, क्लब और समाज के लोग भी अपनी संस्कृति एवं परंपराओं के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए समय-समय पर जन-जागरण कार्यक्रमों, उत्सव एवं धार्मिक अनुष्ठान आयोजित करते हैं। मुझे खुशी है कि वृहत्तर गुवाहाटी ताई अहोम समाज और अहोम समाज से संबंधित संगठन इसमें अपना सक्रिया योगदान दे रहे हैं।

देवियो और सज्जनो,

भारतीय संस्कृति समस्त मानव जाति का कल्याण चाहती है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन गौरवशाली मान्यताओं एवं परंपराओं के साथ ही नवीनता का समावेश भी दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति युग की मांग के अनुसार विकसित और रूपांतरित होती रही है।

वैसे तो भारतीय संस्कृति का आधार वास्तविक धर्म में है और यह कभी नष्ट नहीं हो सकती। हां उसके रंग-रूप बदल सकते हैं। उसे पालन करने वालों की शैली बदल सकती है। प्राचीन सूत्रों की व्याख्याएं बदल सकती हैं, लेकिन धर्म की जो बुनियाद है, वह समय से परे है। पीढ़ियां आती हैं, जाती है, धर्म स्थिर रहता है। वक्त की धूल उसे उड़ा नहीं सकती।

यह देखकर मुझे बहुत दुःख होता है कि हमारी युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति और पारंपरिक मूल्यों को भूलती जा रही है। बड़ों का सम्मान करने, अपने त्योहार मनाना, पास-पड़ोस के लोगों की सहयाता करना जैसे पारंपरिक जीवन मूल्य धीर-धीरे हमारे समाज से दूर होते जा रहे हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम बड़े लोग बच्चों के समक्ष एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत करें, जिसे वे अपना सकें। मां-बाप का दायित्व है कि वे अपने बच्चों को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की वास्तविकता, महानता, गौरव का ज्ञान कराएं।

हमारी भारतीय संस्कृति प्राचीन काल से सुदृढ़ रही है, वर्तमान में भी मजबूती से आगे बढ़ रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ऐसे सद्प्रयासों से भविष्य में भी अपनी सुदृढ़ता को बरकरार रखते हुए अक्षुण्ण रहेगी। भारतीय संस्कृति केवल संस्कृति नहीं, बल्कि एक एहसास है, जो हर भारतीयों के दिलों-दिमाग में व्याप्त है।

इसी आशा के साथ मैं वृहत्तर गुवाहाटी ताई अहोम समुदाय एवं समाज के अन्य संगठनों से अपील करता हूं कि वे बदलती आधुनिकता का अनुसरण करते हुए अपनी सांस्कृतिक मूल्यों, परंपरा और रीति-रिवाज से जुड़े रहें और दूसरों को भी जुड़ने के लिए प्रेरित करें ताकि समाज में आपसी भाईचारा और एकता बनी रहे।

पुनः मी-डैम-मी-फी उत्सव के सफल और उत्साहपूर्ण आयोजन के लिए आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

जय हिन्द।